सरहुल महोत्सव

चर्चा में क्यों?

1 अप्रैल 2025 को झारखंड **और** छोटे **नागपुर क्षेत्र** के **आदिवासियों ने सरहुल त्योहार** के साथ नए साल और वसंत के आगमन का उत्सव मनाया।

मुख्य बिंदु

- **प्रकृति और साल वृक्ष की पूजा:**
  - आदिवासी **साल वृक्षों (शोरिया रोबस्टा) की** पूजा करते हैं, उनका मानना है कि ये **सरना माँ का निवास स्थान है, जो गाँवों को प्राकृतिक आपदाओं से बचाती हैं।**
  - **सरहुल, जिसका अर्थ है "साल वृक्ष की पूजा",** सबसे पूजनीय आदिवासी त्योहारों में से एक है, जो **सूर्य और पृथ्वी के मिलन का प्रतीक है।**
    - **पाहन (गाँव का पुजारी) सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि उसकी पत्नी (पाहेन) पृथ्वी का प्रतीक है।**
  - इस पवित्र मिलन को जीवन को बनाए रखने के लिये आवश्यक माना जाता है, क्योंकि यह सूर्य की किरणों का मिट्टी से मिलकर विकास को सक्षम बनाता है।
  - आदिवासी सरहुल अनुष्ठान पूरा करने के बाद ही **अपने खेतों की जुताई, फसल बोना और वन उपज एकत्र करना शुरू करते हैं।**
  - यह त्योहार **उरांव, मुंडा, संथाल, खड़िया और हो जनजातियों द्वारा मनाया जाता है, जिनमें से प्रत्येक की अलग-अलग परंपराएँ हैं।**
- **सरहुल का विकास और इसका राजनीतिक महत्त्व:**
  - 1960 के दशक में आदिवासी नेता बाबा कार्तिक उरांव ने सामाजिक न्याय और आदिवासी पहचान संरक्षण की वकालत करते हुए **राँची में सरहुल उत्सव शुरू किया।**
  - पिछले 60 वर्षों में यह उत्सव सरहुल का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बन गया है तथा राँची में सरिम टोली सरना स्थल एक प्रमुख सभा स्थल बन गया है।
  - यह त्योहार राजनीतिक रूप से भी महत्त्वपूर्ण हो गया है तथा आदिवासी पहचान को विकसित करने के लिये एक मंच के रूप में कार्य कर रहा है।

साल वृक्ष

- **परिचय:**
  - **शोरिया रोबस्टा** या साल वृक्ष, डिप्टेरोकार्पेसी परिवार का एक वृक्ष प्रजाति है।
  - यह वृक्ष **भारत, बांग्लादेश, नेपाल, तिब्बत और हिमालयी क्षेत्रों का मूल निवासी है।**

- **विवरण:**
    - यह **40 मीटर तक ऊँचा हो सकता है** तथा इसके **तने का व्यास 2 मीटर होता है।**
    - पत्तियाँ **10-25 सेमी लंबी और 5-15 सेमी चौड़ी होती हैं।**
    - **आर्द्र क्षेत्रों** में साल **सदाबहार होता है; शुष्क क्षेत्रों में** यह **शुष्क ऋतु में पर्णपाती होता है,** जिसके अधिकांश पत्ते फरवरी से अप्रैल तक गिर जाते हैं तथा अप्रैल और मई में पुनः पत्ते निकल आते हैं।
    - साल के वृक्ष को मध्य प्रदेश, ओडिशा और झारखंड सहित **उत्तरी भारत में सखुआ के नाम से भी जाना जाता है।**
    - यह दो भारतीय राज्यों- **छत्तीसगढ़ और झारखंड का राज्य वृक्ष है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sarhul-festival-1